स्नानविषयक धर्मशास्त्रीय निर्देशन

१.स्नान किये बिना जो पुण्यकर्म किया जाता है, वह निष्फल होता है। उसे राक्षस ग्रहण कर लेते हैं-

स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः सन्ध्योपासनमेव च।
स्नानाचारविहीनस्य सर्वाः स्युः निष्फलाः क्रियाः।

(वाधूलस्मृति ६ ९)

नहि स्नानं विना पुंसां प्राशस्त्य कर्मसु स्मृतम्॥

(लघुव्याससंहिता १ १७)

अस्नातो नाचरेत्कर्म जपहोमादि किञ्चन॥

(बृहत्पराशरस्मृति)

विना स्नानं तु यत्कर्म पुण्यकार्यमयं शुभम्।
क्रियते निष्फलं ब्रह्मस्त प्रान्त राक्षसाः ॥

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

(स्कन्दपुराण, ब्रह्म ० चातुर्मास्य ०१।२४)

२. **दुःस्वप्न देखने, हजामत बनवाने, वमन होने, स्त्रीसंग करने और श्मशानभूमिमें जानेपर वस्त्रसहित स्नान करना चाहिये-**

क्षुरकर्मणि वान्ते च स्त्रीसम्भोगे च पुत्रक ॥
स्नायर्यात चैलवान् प्राज्ञः कटभूमिमुपेत्य च।

(मार्कण्डेयपुराण ३४१८२-८३)

मैथुने कटधूमे च सद्यः स्नानं विधीयते।

(अग्निपुराण १५७।३०)

दुःस्वप्नदर्शने चैव वान्ते वा क्षुरकर्मणि।
मैथुने कटधूमे च सद्यः स्नानं विधीयते ॥

(बृहत्पराशरस्मृति ८ २७१)

चिताधूमसेवने सर्वे वर्णाः स्नानमाचरेयुः।

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

मैथुने दुःस्वप्ने रुधिरोपगतकण्ठे वमनविरेकयोश्च।
श्मश्रुकर्मणि कृते च--

(विष्णुस्मृति २२)

दुःस्वप्नं यदि पश्येत्तु वान्ते वा क्षुरकर्मणि ।
मैथुने प्रेतधूमे चस्तानमेव विधीयते ॥

(पराशरस्मृति १२॥१)

३.तेल लगानेके बाद, श्मशानसे लौटनेपर, स्त्रीसंग करनेपर और क्षौरकर्म (हजामत) करनेके बाद जबतक मनुष्य स्नान नहीं करता, तबतक वह चाण्डाल बना रहता है।

तैलाभ्यङ्ने चिताधूमे मैथुने क्षौरकर्मणि।
तावद्भवति चाण्डालो यावत्स्नानं न चाचरेत् ॥

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

(चाणक्यनीति ८।६)

४.यदि नदी हो तो जिस ओरसे उसकी धारा आती हो, उसी ओर मुँह करके तथा दूसरे जलाशयोंमें सूर्यकी ओर मुँह करके स्नान करना चाहिये-

स्रवन्ती चेत् प्रतिस्रोते प्रत्यर्क चान्यवारिषु।
मजेदोमित्युदाहृत्य न च विश्लोभयेजलम ॥

(महाभारत, आश्व ० ९ २)

५.कुएँसे निकाले हुए जलकी अपेक्षा झरनेका जल पवित्र होता है। उससे पवित्र सरोवरका जल तथा उससे भी पवित्र नदीका जल बताया जाता है। तीर्थका जल उससे भी पवित्र होता है और गंगाका जल तो सबसे पवित्र माना गया है-

भूमिष्ठमुद्धृतात् पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम् ।
ततोऽपि सारसं पुण्यं तस्मान्नादेयमुच्यते ॥

तीर्थतोयं ततः पुण्यं गाङ्गं पुण्यन्तु सर्वतः।

(अग्निपुराण १५५। ५-६)

भूमिष्ठादुद्धृतं पुण्यं ततः प्रस्त्रवणादिकम्।
ततोऽपि ..

(गरुडपुराण, आचार ० २०५। ११३ ११४)

६.दूसरोंके बनाये हुए सरोवरमें स्नान करनेसे सरोवर बनानेवालेका पाप स्नान करनेवालेको लगता है। अत: उसमें स्नान न करे। यदि दूसरेके सरोवरमें स्नान करना ही पड़े तो पाँच या सात ढेला मिट्टी निकालकर स्नान करे-

परकीयनिपानेषु न स्नायाद्वै कदाचन।
निपानकर्तुः स्नात्वा तु दुष्कृतांशेन लिप्यते ॥

(वाधूलस्मृति ६४)

परकीयनिपानेषु न स्नायाच्च ..

(मनुस्मृति ४। २०१)

परकीयनिपानेषु यदि स्नायात्कथञ्चन ॥
सप्तपिण्डान् समुदधृत्य तत्र स्नान समाचरेत् ॥

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

(वाधूलस्मृति ६७)

कदाचिद्विदुषा मिथ्या न स्नातव्यं पराम्भसा।
अम्भकदुष्कतांशेन स्नानकर्तापि लिप्यते ॥
पञ्च वा सप्त वा पिण्डान्स्नायादुद्धृत्य तत्र तु।

(बृहत्पराशरस्मृति २। १०६-१०७)

परकीयनिपानेषु न स्नायाद्वै कदाचन।
पञ्चपिण्डान्समुद्धृत्य स्नायाद्वा सम्भवात् पुनः।।

(लघुव्याससंहिता २।११)

पञ्च पिण्डाननुद्धृत्य नस्नायात् परवारिषु।

(गरुडपुराण, आचार ० ९ ६।५८)

उद्धृत्य पञ्चमृत्पिण्डान्स्नायात्परजलाशये।

(स्कन्दपुराण, ब्रह्म ० धर्मा०६।९ ४)

पञ्चपिण्डाननुद्धृत्य नस्नायात् परवारिणि।

(वामनपुराण, १४ ॥७ ९)

७.भोजनके बाद, रोगी रहनेपर, महानिशा (रात्रिके मध्य दो पहर) में, बहुत वस्त्र पहने

हुए और अज्ञात जलाशयमें स्नान नहीं करना चाहिये-

न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा नातुरो न महानिशि।
न वासोभिः सहाजन नाविज्ञाते जलाशये ॥

(मनुस्मृति ४।१२ ९)

८.रातके समय स्नान नहीं करना चाहिये। सन्ध्याके समय भी स्नान नहीं करना चाहिये। परन्तु सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहणके समय रात्रिमें भी स्नान कर सकते हैं-

ननक्तं स्नायात्। (बौधायनस्मृति २।३।५२)

नरात्रौ राहुदर्शनवर्जम्। नसन्ध्ययोः।

(विष्णुस्मृति ६४)

निशायां चैव न स्नायात्सन्ध्यायां ग्रहणं विना।

(स्कन्दपुराण, ब्रह्म ० चातुर्मास्य ०१।२९)

भास्करस्य करैः पूतं दिवा स्नानं प्रशस्यते।
अप्रशस्तं निशि स्नानं राहोरन्यत्रदर्शनात् ॥

(पाराशरस्मृति १२।२०)

अस्तमिते चस्नानम् ॥

(आपस्तम्बधर्मसूत्र १।११।३२८)

'ननिशायां कदाचन' (महाभारत,अनु ०१०४।५१)

'स्नायीतन तथा निशि' (मार्कण्डेयपुराण ३४१५१)

उपरागे परं स्नानमृते दिनमुदाहृतम्।

(मार्कण्डेयपुराण३४।५२; ब्रह्मपुराण२२१।५१)

९.पुत्रजन्म, सूर्यकी संक्रान्ति, स्वजनकी मृत्यु, ग्रहण तथा जन्म नक्षत्रमें चन्द्रमा रहनेपर रात्रिमें भी स्नान किया जा सकता है-

स्नायाच्छिर: स्नानतया च नित्यं
न कारणं चैव विना निशासु।
ग्रहोपरागे स्वजनापयाते
मुक्त्वा च जन्मर्क्षगते शशाङ्के ॥

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

(वामनपुराण १४।५३)

पुत्रजन्मनि योगेषु तथा संक्रमणे रवेः।
राहोश्च दर्शने स्नान प्रशस्तं निशि नान्यथा ॥

(गरुडपुराण, आचार० २०५।११६)

१०. बिना शरीरकी थकावट दूर किये और बिना मुख धोये स्नान नहीं करना चाहिये-

नाविगतक्लमो नानाप्लुतवदनोन नग्न उपस्पृशेत्

(चरकसंहिता, सूत्र ०८।१ ९)

११.सूर्यकी धूपसे सन्तप्त व्यक्ति यदि तुरन्त (बिना विश्राम किये) स्नान करता है तो उसकी दृष्टि मन्द पड़ जाती है और सिरमें पीड़ा होती है-

आतपसन्तप्तस्य जलावगाहो
दृङ्मान्द्यं शिरोव्यथांचजनयति ॥

(नीतिवाक्यामृत २५। २८)

१२.काँसेके पात्रसे निकाला हुआ जल कुत्तेके मूत्रके समान अशुद्ध होनेके कारण स्नान और देवपूजाके योग्य नहीं होता। उसकी शुद्धि पुनः स्नान करनेसे ही होती है-

कांस्यपात्राच्युतं वारि स्नाने च देवतार्चने।
श्वानमूत्रसमं तोयं पुनः स्नानेन शुध्यति ॥

(प्रजापतिस्मृति ११८)

१३.नग्न होकर कभी स्नान नहीं करना चाहिये-

'न नग्नः स्नानमाचरेत्'

(मनुस्मृति ४। ४५; कूर्मपुराण, उ०१६। ६५; पद्मपुराण, स्वर्ग० ५५। ६५)

'न नग्नः स्नायात्'

(बौधायनस्मृति २।३।५१)

'ननग्नः'

(विष्णुस्मृति ६४)

'नावगाहेदपो नग्नः' (कूर्मपुराण, उ ०१६।५७; पद्मपुराण, स्वर्ग ०५५।५७)

'न नग्नः प्रविशेजलम्'

(सुश्रुतसंहिता, चिकित्सा ०२४।१००)

'न नग्न उपस्पृशेत्' (चरकसंहिता, सूत्र ०८।१९)

'नग्नस्नानं नकुर्वीत'

(स्कन्दपुराण,मा०कौ०४१ ।१५७)

'ननग्नः स्नातुमर्हति'

(महाभारत, अनु ०१०४।६७)

'न नग्नः कर्हिचित् स्नायात्'

(महाभारत, अनु ०१०४।५१)

'ननग्नः स्नानमाचरेत्'

(अग्निपुराण १५५।२२)

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

'नस्नायान्न स्वपेनग्नः'

(विष्णुपुराण ३।१२।१ ९)

नच स्नायीत वै नग्नोन शयीत कदाचन।

(वामनपुराण १४।४७)

१४. पुरुषको नित्य सिरके ऊपरसे स्नान करना चाहिये। सिरको छोड़कर स्नान नहीं करना चाहिये। सिरके ऊपरसे स्नान करके ही देवकार्य तथा पितृकार्य करने चाहिये-

स्नायाच्छिरः स्नानतया च नित्यम्'

(वामनपुराण १४।५३)

शिरो विवयं न स्नायानिमजेतामुना सह।

(शाण्डिल्यस्मृति २।५७)

'नच स्नायाद्विना ततः' (मनुस्मृति ४।८२)

शिरःस्नातोऽथ कुर्वीत दैवं पित्र्यमथापि च ॥

(महाभारत, अनु ०१०४।१२५)

१५. बिना स्नान किये कभी चन्दन आदि नहीं लगाना चाहिये-

नानुलेपनमादद्यान्नास्नातः कर्हिचिद् बुधः।

(मार्कण्डेयपुराण ३४।५३)

अनुलेपनमादद्यान्नास्नातः कर्हिचिद् बुधः ॥

(ब्रह्मपुराण २२११५२)

१६. रविवार, श्राद्ध, संक्रान्ति. ग्रहण, महादान, तीर्थ, व्रत-उपवास, अमावस्या, षष्ठी तिथि अथवा अशौच प्राप्त होनेपर मनुष्यको गर्म जलसे स्नान करना चाहिये-

रविसंक्रान्तिवारेषु ग्रहणेषु शशिक्षये।
व्रतेषु चैव षष्ठीषु न स्नायादुष्णवारिणा ॥

(बृहत्पराशरस्मृति २।११२)

रवेर्दिने तथा श्राद्धे संक्रान्तौ ग्रहणे तथा।
महादाने तथा तीर्थे उपवासदिने तथा ॥

अशौचेऽप्यथवा प्राप्ते न स्नायादुष्णवारिणा।

(शिवपुराण, रुद्र ० सृष्टि ० १३।१०-११)

१७. जो दोनों पक्षोंकी एकादशीको आँवलेसे स्नान करता है, उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं और वह विष्णुलोकमें सम्मानित होता है-

एकादश्यां पक्षयुगे धात्रीस्नानं करोति यः।
सर्वपापं क्षयं याति विष्णुलोके महीयते ॥

(पद्मपुराण, सृष्टि ०६२।७)

१८. स्नानके बाद अपने अंगोंमें तेलकी मालिश नहीं करनी चाहिये तथा गीले वस्त्रोंको झटकारना नहीं चाहिये-

स्नात्वा च नावमृज्येत गात्राणि सुविचक्षणः॥
न चानुलिम्पेदस्नात्वा स्नात्वा वासो ननिर्धुनेत्।

(महाभारत, अनु०१०४।५१-५२)

१९. स्नानके बाद अपने गीले बालोंकों फटकारना (झाड़ना) नहीं चाहिये-

'केशान्न धूनयेत्'

(लघुहारीतस्मृति ४ । ३३)

'नच निर्धूनयेत्केशान्' (विष्णुपुराण ३।१२। २४)

'नचापि धूनयेत् केशान्' (मार्कण्डेयपुराण ३४।५३)

नचावधूनयेत्केशान्' (ब्रह्मपुराण २२१।५२)

"सनातो न केशान् विधुनीत चापि '

(वामनपुराण १४ ।५४)

'स्नातो न धूनयेत्केशान् '

(स्कन्दपुराण. मा० कौ० ४१।१६२)

स्नात: शिरो नावधुनेत्' (विष्णुस्मृति ६४)

'नकुर्यात्केशधूननम्' (नरमिंहपुराण ५८ । ७२)

'नकेशाग्राण्यभिहन्यात्' (चरकसंहिता, सूत्र ८।१९)

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

२०. स्नानके बाद वस्त्रको चौगुना करके निचोड़े, तिगुना करके नहीं | घरमें वस्त्र निचोड़ते समय उसके छोरको नीचे करके निचोड़े और नदीमें स्नान किया हो तो ऊपरकी ओर छोर करके भूमिपर निचोड़े | निचोड़े हुए वस्त्रको कन्धेपर न रखे-

निष्पीडितं वस्त्र न स्कन्धे क्षिपेत्। चतुर्गुणीकृत्य वस्त्र गृहे5धोदर्श नद्यामूर्ध्वदर्श स्थले निष्पीडयेद न तु त्रिगुणम् । (धर्मसिंधु ३१० आह्निक०)

२१. स्नानके बाद हाथोंसे शरीरको नहीं पोंछना चाहिये-

'करेण नो मृजेदगात्रम्'

(स्कन्दपुराण, ब्रह्म० धर्मा० ६।६८ -६९)

अपमृज्यान्त च स्नातो गात्राण्यम्बरपाणिभिः ॥

(मार्कण्डेयपुराण ३४।५२)

अपमृज्यान वस्त्रान्तैर्गात्राण्यम्बरपाणिपभिः ॥

(ब्रह्मपुराण २२१ ।५१)

स्नातो नाङ्गानिसम्माजेत्स्नानशाट्या न पाणिना।

(विष्णुपुराण ३।१२। २४)

२२. स्नानके समय पहने हुए भीगे वस्त्रसे शरीरको नहीं पोंछना चाहिये। ऐसा करनेसे शरीर कुत्तेसे चाटे हुएके समान अशुद्ध हो जाता है, जो पुन: स्नान करनेसे ही शुद्ध होता है-

स्नानवस्त्रेण यः कुर्याददेहस्य परिमार्जनम्।

शुनालीढं भवेदगाश्रं पुनः स्तानेन शुध्यति॥

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

(वाधूलस्मृति ७१)

करेण नो मृजेदगात्रं स्तानवस्त्रेण वा पुनः ॥

शुनोच्छिष्टं भवेदगाश्नं पुनः स्नानेन शुध्यति।

(स्कन्दपुराण, ब्रह्म० धर्मा० ६1६८ ६९)

स्नातो नाङ्गानि सम्मार्जेत्स्नानशाट्या न पाणिना।

(विष्णुपुराण ३।१२। २४)

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661